



राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
National Institute of Open Schooling

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संस्थान)
(An Autonomous Institution under Ministry of Education, Government of India)

NIOS B.Ed Bridge Course

असाइनमेंट

Course No. 1

पाठ्यक्रम संख्या 1 – बाल विकास एवं
शैक्षिक मनोविज्ञान

NIOS BEd Bridge Course

कोर्स _____

Submitted By :

Name / नाम : _____

Enrolment No. / नामांकन संख्या : _____ Roll No. / अनुक्रमांक : _____

Address / पता : _____

Village / ग्राम : _____ P.O. / पोस्ट : _____

Thana / थाना : _____ Dist. / जिला : _____

Pin Code / पिन कोड : _____ Mob. No. / मो.नं. : _____

E-mail / ई-मेल : _____

अध्ययनाध्यापन के अवधि दिनांक _____ से _____ तक

शिक्षण विद्यालय का नाम : _____

Submitted To :

Study Centre / अध्ययन केन्द्र : _____

Date of Submission / जमा करने की दिनांक : _____

Signature / हस्ताक्षर : _____

Applicant Details

Course	Six months certificate course (Bridge) in Primary Teacher Education		
Reference No.	[REDACTED]	Enrolment No.	[REDACTED]
Name	[REDACTED]		
Father's Name	[REDACTED]		
Mother's Name	USHA SINGH		
Date of Birth	[REDACTED]	Gender	Male
Email	[REDACTED]	Mobile Number	[REDACTED]



Address Details

	Permanent Address	Correspondence Address
House No	660	660
Street	[REDACTED] Park	[REDACTED]
District	AURAIYA	AURAIYA
State	UTTAR PRADESH	UTTAR PRADESH
Country	India	India
Pincode	206122	206122

School & NIOS Regional Centre Details

School

UDISE Code	Name	Block	District	State	Pincode
[REDACTED]	[REDACTED]	[REDACTED]	[REDACTED]	[REDACTED]	[REDACTED]

NIOS Regional Centre

Name	Address	District	State	Country
ALLAHABAD	N/A	PRAYAGRAJ	UTTAR PRADESH	India
Email	Phone No	Fax No	Head Name	Designation
rdallahabad@nios.ac.in	0532-2548154	Sh. Sanjay Kumar	Sh. Sanjay Kumar	Assistant Director and Regional Director

BEd BRIDGE COURSE

Course 1 Assignment

कार्य 1 : विभिन्न आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों के साथ एक दिन बिताकर अवलोकन-आधारित रिपोर्ट

विषय - सूची

1. प्रस्तावना
2. अध्ययन के उद्देश्य
3. अध्ययन में शामिल बच्चों का संक्षिप्त परिचय
4. शारीरिक (Physical) कारकों का प्रभाव
5. भावनात्मक (Emotional) कारकों का प्रभाव
6. सामाजिक (Social) कारकों का प्रभाव
7. भाषायी (Language) कारकों का प्रभाव
8. सांस्कृतिक (Cultural) कारकों का प्रभाव
9. धार्मिक (Religious) कारकों का प्रभाव
10. समग्र विश्लेषण
11. निष्कर्ष

1. प्रस्तावना

बाल विकास और शैक्षिक मनोविज्ञान को समझने के लिए केवल पाठ्यपुस्तकों पढ़ना पर्याप्त नहीं होता, बल्कि बच्चों के बीच रहकर उनके व्यवहार और परिस्थितियों का प्रत्यक्ष अवलोकन करना भी बहुत आवश्यक है। इस कार्य के अंतर्गत मुझे अलग-अलग आर्थिक पृष्ठभूमि (different economic status) वाले बच्चों के साथ एक दिन बिताने का अवसर मिला। कुछ बच्चे आर्थिक रूप से समन्न परिवारों से थे, जबकि कुछ बच्चे आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से संबंधित थे। इस अवलोकन के माध्यम से मैंने यह समझने की कोशिश की कि शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, भाषायी, सांस्कृतिक और धार्मिक कारक बच्चों के दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

2. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे:

1. विभिन्न आर्थिक स्तर वाले बच्चों के दैनिक जीवन और व्यवहार को नजदीक से देखना।
2. यह जानना कि शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, भाषायी, सांस्कृतिक और धार्मिक कारक बच्चों को रोज़ाना कैसे प्रभावित करते हैं।
3. संमन्न और कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि वाले बच्चों के विकास में समानताओं और भिन्नताओं की पहचान करना।
4. ऐसे निष्कर्ष निकालना जो शिक्षक और अभिभावक, दोनों के लिए उपयोगी हों, ताकि वे सभी बच्चों के प्रति अधिक संवेदनशील और सहयोगी दृष्टिकोण विकसित कर सकें।

3. अध्ययन में शामिल बच्चों का संक्षिप्त परिचय

अवलोकन में जिन बच्चों को शामिल किया गया, उन्हें दो मुख्य समूहों में बाँटा जा सकता है:

1. आर्थिक रूप से संमन्न परिवारों के बच्चे

- ये बच्चे प्रायः निजी या अच्छे संसाधनों वाले विद्यालयों में पढ़ते हैं।
- इनके पास साफ-सुथरी यूनिफॉर्म, अच्छे जूते, बैग और पर्याप्त पढ़ाई का सामान होता है।
- घर पर पढ़ने के लिए शांत वातावरण, अलग कमरा या व्यवस्थित स्थान उपलब्ध होता है।

2. आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चे

- अभिकांश बच्चे सरकारी स्कूल या कम फीस वाले प्राइवेट स्कूल में पढ़ते हैं।
- कई बार किताबें, काँपी, यूनिफॉर्म या जूते पूरी तरह उपलब्ध नहीं होते।
- घर छोटा होता है, परिवार के सदस्य अधिक, और कभी-कभी बच्चों को पढ़ाई के साथ धरेलू काम या मजदूरी में भी मदद करनी पड़ती है।

इन दोनों वर्गों के बच्चों में परिस्थितियों का अंतर होने के बावजूद, सभी के भीतर खेलना, सीखना, मित्र बनाना और प्यार पाना – यह सामान्य मानवीय इच्छा साफ दिखाई दी।

4. शारीरिक (Physical) कारकों का प्रभाव

शारीरिक विकास पर आर्थिक स्थिति का स्पष्ट प्रभाव देखा गया।

(क) संमन्न परिवारों के बच्चे

- ये बच्चे सुव्यवस्थित और साफ कपड़ों में थे, जूते-मोजे ठीक थे और वे पौष्टिक टिफिन लेकर आए थे।
- वे पूरे दिन ऊर्जावान दिखे, खेल-कूद, दौड़ने-भागने और अन्य गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहें।
- इनके शरीर में थकान और कमजोरी बहुत कम दिखाई दी, जिससे पता चलता है कि उन्हें नियमित रूप से संतुलित भोजन, दूध, फल और स्वास्थ्य-सेवा मिलती है।

(ख) कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे

- इन बच्चों के कपड़े पुराने, कभी-कभी गंदे और ढंग से फिट न होने वाले थे।
- अनेक बच्चों के पास ठीक-ठाक जूते नहीं थे; कुछ नंगे पैर या टूटे-फूटे चप्पलों में आए थे।
- कुछ बच्चों ने नाश्ता नहीं किया था या बहुत साधारण भोजन किया था, जिसके कारण दोपहर तक उनमें थकान, भूख और ध्यान भटकने जैसी स्थितियों देखने को मिलीं।

इन अवलोकनों से स्पष्ट होता है कि आर्थिक स्थिति के कारण भोजन, वस्त्र और स्वास्थ्य सुविधाओं में अंतर, बच्चों के शारीरिक विकास को रोज़ प्रभावित करता है।

5. भावनात्मक (Emotional) कारकों का प्रभाव

भावनात्मक विकास, परिवार के वातावरण और आर्थिक सुरक्षा से गहराई से जुड़ा होता है।

(क) संमन्न परिवारों के बच्चे

- ये बच्चे आत्मविश्वासी और खुलकर बात करने वाले दिखे।
- वे शिक्षक से प्रश्न पूछते, उत्तर देते और साथियों के साथ सहजता से बातचीत करते थे।
- लेकिन उनमें प्रतियोगिता, परीक्षा और भविष्य को लेकर एक प्रकार का मानसिक दबाव भी दिखाई दिया; कुछ बच्चे अच्छे अंक न आने की चिंता से तनावग्रस्त भी लगे।

(ख) कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे

- इन बच्चों में अक्सर संकोच और झिझक दिखाई दी।
- वे कक्षा में बोलने या नए लोगों से बात करने में थोड़ा डर महसूस करते थे।
- परिवार की आर्थिक समस्याएँ, बेरोजगारी या असुरक्षा का प्रभाव उनके चेहरे और व्यवहार पर देखा जा सकता था।
- जब इन बच्चों से धैर्यपूर्वक, प्यार से और बिना डाँट-फटकार के बात की गई तो वे धीरे-धीरे भावनात्मक रूप से खुलने लगे, अपने अनुभव साझा करने लगे और मुस्कुराने लगे।

इससे स्पष्ट होता है कि स्नेह, सुरक्षा-भाव, प्रशंसा और समझ बच्चों के भावनात्मक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

6. सामाजिक (Social) कारकों का प्रभाव

बच्चों का सामाजिक विकास उनकी परिस्थितियों और अवसरों पर निर्भर करता है।

(क) संपन्न परिवारों के बच्चे

- स्कूल के अलावा वे ट्यूशन, खेल अकादमी, डांस या म्यूजिक क्लास में भी जाते हैं, जिससे वे अलग-अलग लोगों से मिलते और सामाजिक रूप से अधिक सक्रिय होते हैं।
- वे समूह में अपने विचार रखने, नेतृत्व करने और निर्णय लेने में अपेक्षाकृत सक्षम हैं।
- इन बच्चों में आत्मविश्वास अधिक दिखाई देता है और वे आसानी से मित्र बना लेते हैं।

(ख) कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि वाले बच्चे

- प्रायः अपने मोहल्ले या गली के दोस्तों के साथ पारिवारिक और साधारण खेल खेलते हैं।
- कई बच्चों के लिए स्कूल के बाद घर के काम, छोटे भाई-बहनों की देखभाल या मजदूरी में मदद करना भी आवश्यक होता है, जिससे सामाजिक गतिविधियों के अवसर सीमित हो जाते हैं।
- कुछ बच्चे संकोची स्वभाव के होते हैं और नए लोगों से घुलने-मिलने में समय लेते हैं, क्योंकि उनके पास संसाधन या सुविधाएँ नहीं रहती।

फिर भी, कठिन परिस्थितियों में भी ये बच्चे आपसी सहयोग, मित्रता, साझा करना और एक-दूसरे की मदद करने की भावना प्रदर्शित करते हैं। यह उनकी सकारात्मक सामाजिक समझ को दर्शाता है।

7. भाषायी (Language) कारकों का प्रभाव

भाषा बच्चों के सोचने, समझने, सीखने और अपने विचार व्यक्त करने का मुख्य माध्यम है।

(क) संमन्न परिवारों के बच्चे

- ये बच्चे प्रायः घर और स्कूल दोनों में समृद्ध भाषायी वातावरण पाते हैं।
- वे हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी या अन्य भाषाओं का भी प्रयोग करते हैं।
- इनकी शब्दावली अधिक समृद्ध होती है और वे अपने विचार स्पष्ट और आत्मविश्वास के साथ व्यक्त करते हैं।
- किताबें, कहानी, समाचार, डिजिटल माध्यम आदि इनके भाषा विकास में सहायक होते हैं।

(ख) कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे

- इन बच्चों की भाषा प्रायः स्थानीय बोली या मातृभाषा तक सीमित होती है।
- कई बच्चे हिंदी बोलने में संकोच करते हैं या शब्दों की कमी महसूस करते हैं।
- घर में शैक्षिक बातवृत्ति कम होने के कारण उनकी शब्दावली सीमित होती है।
- फिर भी, जब उन्हें प्रोत्साहन और प्रेमपूर्वक सुनने वाला वातावरण मिलता है, तो वे धीरे-धीरे अधिक आत्मविश्वास से बोलने लगते हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि भाषा का विकास बच्चों की शिक्षा, आत्म-अभिव्यक्ति, सामाजिक सहभागिता और भविष्य की संभावनाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

8. सांस्कृतिक (Cultural) कारकों का प्रभाव

संस्कृति बच्चों के जीवन मूल्यों, व्यवहार और सोचने के तरीके को प्रभावित करती है।

(क) संमन्न परिवारों के बच्चे

- ये बच्चे विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों जैसे - संगीत, नृत्य, चित्रकला, त्योहारों और सामाजिक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।
- उन्हें अपनी परंपराओं के साथ-साथ आधुनिक जीवन शैली से भी परिचय मिलता है।
- इनमें विविधता के प्रति सम्मान और सहिष्णुता की भावना अधिक देखी गई।

(ख) कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे

- ये बच्चे अपने स्थानीय संस्कृति, रीति-रिवाजों और पारिवारिक परंपराओं से गहराई से जुड़े रहते हैं।
- ये त्योहारों और सामुदायिक आयोजनों में भाग लेते हैं, लेकिन कई बार संसाधनों की कमी के कारण बड़े सांस्कृतिक अवसरों से वंचित रह जाते हैं।
- फिर भी, इन बच्चों में अपनी परंपराओं के प्रति गहरा लगाव और सम्मान देखने को मिलता है।

संस्कृति बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक समायोजन और नैतिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

9. धार्मिक (Religious) कारकों का प्रभाव

धार्मिक मान्यताएँ और आस्थाएँ भी बच्चों के जीवन, व्यवहार और सोच को प्रभावित करती हैं।

(क) संमन्न परिवारों के बच्चे

- ये बच्चे अपने धार्मिक त्योहारों, रीति-रिवाजों और पूजा-पाठ में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।
- परिवार के साथ मंदिर जाते हैं, धार्मिक ग्रंथों की कहानियाँ सुनते हैं और नैतिक शिक्षा प्राप्त करते हैं।
- घर के वातावरण में धार्मिक गतिविधियों और संस्कारों का पालन नियमित रूप से होता है, जिससे इन बच्चों में सकारात्मक सोच, अनुशासन और दूसरों के प्रति सम्मान की भावना विकसित होती है।

(ख) कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे

- ये बच्चे भी अपने परिवार की धार्मिक मान्यताओं का पालन करते हैं, लेकिन कई बार आर्थिक कठिनाइयों के कारण धार्मिक गतिविधियों में पूरी तरह भाग नहीं ले पाते।
- कुछ बच्चों के माता-पिता दिन भर काम में व्यस्त रहते हैं, इसलिए धार्मिक संस्कारों पर कम ध्यान दे पाते हैं।
- फिर भी, इन बच्चों में ईश्वर के प्रति विश्वास, भक्ति और अच्छे कर्म करने की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

धार्मिक कारक बच्चों में नैतिक मूल्यों, अनुशासन, सहनशीलता और सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

10. समग्र विश्लेषण

अवलोकन के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि विभिन्न आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों के जीवन पर शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, भाषायी, सांस्कृतिक और धार्मिक कारकों का संयुक्त प्रभाव पड़ता है।

- संमन्न परिवारों के बच्चों को बेहतर संसाधन, स्वास्थ्य-सुविधाएँ, सुरक्षित वातावरण और अधिक अवसर मिलते हैं, जिससे उनका समग्र विकास अपेक्षाकृत बेहतर होता है।
- कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे अनेक चुनौतियों का सामना करते हैं, फिर भी उनमें सीखने की तीव्र इच्छा, मेहनत करने की आदत और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण देखने को मिलता है।
- दोनों वर्गों के बच्चों में कुछ समानताएँ भी होती हैं, जैसे - खेलना, मित्र बनाना, स्नेह पाना और सीखने की रुचि। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सही मार्गदर्शन, सहयोग और समान अवसर मिलने पर सभी बच्चे अपनी क्षमता के अनुसार आगे बढ़ सकते हैं।

11. निष्कर्ष

इस कार्य से यह निष्कर्ष निकला कि आर्थिक स्थिति बच्चों के जीवन को प्रभावित करती है, लेकिन यह उनके विकास का एकमात्र निर्धारक नहीं है। यदि परिवार, शिक्षक और समाज मिलकर सभी बच्चों को समान अवसर, प्रेम, सुरक्षा और सहयोग प्रदान करें, तो वे अपने जीवन में आगे बढ़ सकते हैं और एक बेहतर, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक बन सकते हैं।

12. सुझाव

- ① सभी बच्चों को समान अवसर देने के लिए विद्यालयों में समावेशी वातावरण बनाया जाए।
- ② कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि वाले बच्चों के लिए पोषण, स्वास्थ्य जांच और आवश्यक अध्ययन सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।
- ③ शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों की भावनात्मक आवश्यकताओं को समझें और उन्हें प्रोत्साहित करें।
- ④ परिवारों को बच्चों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताने और सकारात्मक संवाद करने के लिए प्रेरित किया जाए।
- ⑤ भाषा, संस्कृति और धार्मिक विविधता का सम्मान करते हुए बच्चों को समान दृष्टि से देखा जाए।
- ⑥ समुदाय स्तर पर खेल, पुस्तकालय, सांस्कृतिक और रचनात्मक गतिविधियों के अधिक अवसर उपलब्ध कराए जाएँ।
- ⑦ समाज में आर्थिक असमानता को कम करने के लिए दीर्घकालिक उपाय किए जाएँ ताकि सभी बच्चों को बेहतर जीवन-परिस्थितियाँ मिल सकें।
- ⑧ बच्चों में आत्मविश्वास, सहयोग, संवेदनशीलता और मानवता के मूल्यों का विकास किया जाए।

13. उपसंहार

विभिन्न आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों के साथ एक दिन बिताने का यह अनुभव मेरे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और सीख देने वाला रहा। इससे यह स्पष्ट हुआ कि बच्चों का विकास केवल उनकी व्यक्तिगत क्षमता पर ही नहीं, बल्कि उनके परिवार, समाज, भाषा, संस्कृति, धर्म और आर्थिक परिस्थितियों पर भी निर्भर करता है। यदि हम सभी बच्चों को समान अवसर, प्रेम, सुरक्षा और सहयोग प्रदान करें, तो वे न केवल अपने जीवन में सफल होंगे, बल्कि एक बेहतर और समावेशी समाज के निर्माण में भी योगदान देंगे।

— समाप्त —